राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
माध्यमिक पाठ्यक्रम : कर्नाटक संगीत
पाठ 4 : अभ्यास गान का परिचय (सरली वरीसई से स्वरजाति तक)
कार्यपत्रक - 4

1. कर्नाटक संगीत के अंतर्गत दो प्रकार के गान मान्य हैं। उनका उल्लेख कीजिये ।

2. कर्नाटक संगीत के प्रारंभिक अभ्यास के लिये प्रयुक्त राग की पहचान करें। इस कार्य के लिये इसके प्रयोग का औचित्य सिद्ध कीजिये ।

3. 'सरली वरीसा की महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी रचना का क्रम है'। उक्त कथन का अपने शब्दों में औचित्य सिद्ध कीजिये ।

4. सरली वरीसा की ताल की पहचान कीजिये । प्रथम और द्वितीय लयों सहित एक उदाहरण लिखिए ।

5. 'जनता वरीसा' का अर्थ स्पष्ट कीजिये ।

6. 'दातु वरीसा' का अर्थ स्पष्ट कीजिये ।

7. 'अभ्यास गान संगीत का मूल अध्याय है'। इस वाक्य का विश्लेषण कीजिये ।

8. पिल्लरी और संचारी गीतों की विषय वस्तु के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिये ।

9. अभ्यास गान की एक संगीत विधा की पहचान कीजिये जिसमें साहित्य नहीं होता है।

10. हेच्चु और तग्गु स्थाई वरीसा दोनों का एक-एक उदाहरण दीजिये ।